DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

MODERN HISTORY

गांधीजी के स्थानीय प्रयोग

LIVE 22-07-2024 04:00 PM

9 जनवरी 1915

दक्षिण अफ्रीका – भारत

राजनीतिक गुरु
गोपाल कृष्ण गोखले

सुझाव – पूरे एक वर्ष भारत का भ्रमण कीजिए, फिर किसी राजनीतिक दल को ज्वाइन करना।

गांधीय आंदोलन (स्थानीय प्रयोग)

- चम्पारण
- खेड़ा
- अहमदाबाद

गांधी जी के स्थानीय प्रयोग

- 9 जनवरी 1915 को गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस लौट आए।
- इस समय प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था और ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों से सलाह मशवरा किए बगैर, भारत को भी अपनी तरफ से युद्धरत घोषित कर दिया। मित्र राष्ट्रों ने इसका उद्देश्य "विश्व में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करना" बतया।
- गांधी जी और अन्य भारतीयों को ऐसा लगा कि यदि इन विषम परिस्थितियों में ब्रिटिश सरकार का साथ दिया जाय, तो वह खुश होकर भारत में भी उन्हीं लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास करेंगें, जो मित्र राष्ट्रों का घोषित लक्ष्य है।
- गांधी जी ने इस युद्ध के दौरान भारतीयों से ब्रिटिश सेना में शामिल होने का आह्वान किया। इसी लिए गांधी जी को 'सेना भर्ती' करने वाला 'सार्जेंट' कहकर पुकारा गया।
- गांधी जी के द्वारा किए गए इसी अप्रतिम सहयोग से खुश होकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'कैसरे-हिन्द' की उपाधि प्रदान की।
- इन युद्धकालीन परिस्थितियों में भी गांधी जी ने तीन छोटे-छोटे आंदोलनों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया।
  1) चंपारण सत्याग्रह (1917)
  2) अहमदाबाद मिल मजदूरों का आंदोलन (1918)
  3) खेड़ा सत्याग्रह (1918)

चंपारण सत्याग्रह (1917)

- चंपारण (बिहार), हिमालय के तराई क्षेत्र में स्थित था। (मुख्यालय – मोतिहारी)
- यहां 'तीन कठिया प्रणाली' किसानों के शोषण का पर्याय बनी। जिसके अंतर्गत प्रत्येक किसान को अपनी भूमि के 3/20वें हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य था।
- कृत्रिम नील की आविष्कार होने के बाद भी किसानों को नील की खेती के लिए बाध्य किया जाता था।
- चंपारण के किसान पंडित राजकुमार शुक्ल लखनऊ सम्मेलन में गांधी जी से मिलते है, और उन्हें किसानों की दुर्दशा से अवगत कराते हैं।
- राजकुमार शुक्ल ने ही उन्हें चम्पारण आने का निमंत्रण दिया।

Digital by Sir GS

⇒ गांधी जी ने चम्पारण में 1917 में अपना सत्याग्रह कर वहां के किसानों को उस तिनकठिया पद्धति से मुक्ति प्रदान की।
⇒ चंपारण सत्याग्रह भारत में किया जाने वाला गांधी जी का प्रथम सत्याग्रह था।
⇒ गांधी जी की सफलता के पश्चात रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' की उपाधि प्रदान की थी।
⇒ इस आंदोलन मे उनके सहयोगी बृजकिशोर, जे॰बी॰ कृपलानी, नरहरि पारिख, महादेव देसाई, डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद आदि थे।

अहमदाबाद में मजदूरों का आंदोलन (1918)

⇒ अहमदाबाद (गुजरात) में मिल-मालिक और मजदूरों के मध्य प्लेग के बोनस को लेकर संघर्ष की स्थिति थी।
⇒ मिल मालिकों ने मजदूरों को प्लेग बोनस (वेतन + बोनस) दे रखा था।
⇒ प्लेग समाप्त होने के बाद मिल मालिक बोनस को समाप्त करना चाहते थे।
⇒ मजदूरों की यह मांग थी कि चूंकि प्रथम विश्वयुद्ध की वजह से भारत में महंगाई काफी अधिक बढ़ गई है इसलिए प्लेग बोनस को जारी रखा जाए। मिल मालिक इसके लिए राजी नहीं थे।
⇒ तब गुजरात के एक प्रसिद्ध उद्योगपति अंबालाल साराभाई की बहन अनुसुइया बेन ने गांधी जी को पत्र लिखकर मजदूरों की समस्याओं के बारे में जानकारी दी।
⇒ गांधी जी तब इस मामले को एक ट्रिब्यूनल को सौंप देने को कहा। मिल मालिक इस बात पर राजी नहीं थे।
⇒ मिल मालिक से गांधी जी ने मजदूरों को 35% बोनस देने की अपील की, परन्तु मिल मालिक 20% पर राजी थे। तब गांधी जी ने सारे मजदूरों को हड़ताल पर चले जाने को कहा और बाद में स्वयं भी अनशन प्रारंभ कर दिया।
⇒ भारत में गांधी जी द्वारा किया जाने वाला प्रथम अनशन था।
⇒ इस आंदोलन में गांधी जी के साथ श्री वल्लभ भाई पटेल, शंकरलाल बैंकर और अनुसुइया बेन थी। अंतः मिल मालिक समझौते पर राजी हो गए। इस प्रकार गांधी जी का यह आंदोलन भी सफल रहा।

खेड़ा सत्याग्रह (1918)

गांधी जी का प्रथम किसान सत्याग्रह।
अकाल संहिता के अनुसार, किसी साल विशेष में, सामान्य वर्ष की तुलना में किसी प्राकृतिक आपदा की वजह से यदि एक-चौथाई भी उत्पादन न हुआ हो, तो उस वर्ष विशेष में सरकार के द्वारा लगान माफ कर दिया जाना चाहिए।
1918 में खेड़ा में कमोबेश स्थिति ऐसी ही थी। भयानक अकाल की वजह से फसल बर्बाद हो गई थी, परंतु सरकार इसके बावजूद भी लगान वसूल कर रही थी। जिससे किसानों की समस्याएं काफी बढ़ गयी।
गांधी जी ने इस मामले के निपटारे हेतु भी पंच बिठाने की मांग की न माने जाने पर गांधी जी ने यहां भी सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया।
इस आंदोलन में गांधी जी के साथ वल्लभ भाई पटेल, शंकर लाल बैंकर, अनुसुइया महादेव देसाई आदि थे।
अंत में ब्रिटिश सरकार ने एक गुप्त आदेश जारी कर कहा कि लगान उन्हीं से वसूला जाए, जो देने की स्थिति में हैं। इस प्रकार गांधी जी का यह आंदोलन भी सफल हुआ।

Digvijay Sir GS

खिलाफत एवं असहयोग आंदोलन

प्रथम विश्व युद्ध (1914 – 1918)

मित्र राष्ट्र (विजय)

मित्र राष्ट्र – इंग्लैण्ड ✓
सहयोगी राष्ट्र – बेल्जियम ✓
हॉलैण्ड ✓

उद्देश्य – विश्व में लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करना।
घोषणा – युद्ध में जीत जाने के पश्चात किसी भी पराजित राष्ट्र के साथ कोई अपमानजनक संधि नहीं करेगा। ✓

VIS

धुरी राष्ट्र (पराजय)

धुरी राष्ट्र – जर्मनी ✓
सहयोगी देश – तुर्की ✓

⇒ तुर्की में समस्त मुस्लिम जगत का प्रधान खलीफा रहता था। ✓
⇒ अपमानजनक शर्तें सौंपी।
↓
⇒ खलीफा का अपमान (मुस्लिम)
⇒ समस्त विश्व में जहां पर, मुस्लिम निवास कर रहे, अगर वहां अंग्रेजों का शासन है, तो उनके शासन के विरोध में आंदोलन हुये। ✓
⇒ भारत – खिलाफत आंदोलन

⇒ गांधी जी और कांग्रेसियों ने भी ब्रिटिश सरकार को अपना सहयोग प्रथम विश्वयुद्ध में इस उम्मीद के साथ दिया था कि ब्रिटिश सरकार युद्धोपरांत भारत में भी लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देगी। परंतु युद्धोपरान्त भारत में रॉलेट अधिनियम, जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड जैसी घटनाओं को अंजाम देकर भारतीयों के लोकतांत्रिक मूल्यों की अवहेलना की गई। फलतः रूष्ट होकर इन लोगों ने असहयोग आंदोलन को अंजाम दिया। ✓

⇒ लखनऊ में 1919 में इब्राहिम हारून जफर की अध्यक्षता में एक सम्मेलन आयोजित किया जाता है, इसमें 'अखिल भारतीय खिलाफत समिति' का गठन किया गया।

अध्यक्ष – सेठ दोटानी (बम्बई)
सदस्य – ① मौलाना अबुल कलाम आजाद ✓
② हकीम अजमल खां ✓
③ हसरत मोहानी ✓
④ अली बंधु (मौलाना मु॰ अली तथा शौकत अली) ✓

उद्देश्य – तुर्की के साम्राज्य के बटवारे के विरुद्ध एवं खलीफा के पक्ष में आंदोलन करना था।
पहला सम्मेलन – 23 नवम्बर 1919 (दिल्ली) → अध्यक्ष – फजलुलहक

अगले दिन के सम्मेलन की अध्यक्षता गांधी जी ने की। उन्होंने यह सुझाव दिया कि ब्रिटिश अन्याय का उत्तर असहयोग आंदोलन से दिया जाएगा।
इसी अवसर पर पहली बार गांधी जी ने 'असहयोग' शब्द का प्रयोग किया था।
28 जुलाई 1920 को गांधी जी ने इस बात की घोषणा की कि असहयोग आंदोलन 1 अगस्त 1920 को उपवास प्रार्थना के साथ प्रारंभ किया जायेगा परंतु, इस दिन यह आंदोलन प्रारंभ हो पाता, इसके पूर्व ही बाल गंगाधर तिलक की बम्बई में इसी दिन मृत्यु हो गयी। सर्वाधि यह शोक का विषय था, लेकिन आंदोलन फिर भी प्रारम्भ हुआ। अपनी मृत्यु से पूर्व तिलक ने भी इस आंदोलन को अपना समर्थन दे दिया था।

तिलक की मृत्यु से सम्बंधित तथ्य -

मृत्यु - असहयोग आंदोलन के प्रारम्भ वाले दिन (1 अगस्त 1920 सुबह)
अर्थी को कंधा दिया - महात्मा गांधी, सैफुद्दीन किचलू, शौकत अली।
अंतिम संस्कार - बम्बई की चौपाटी

Statement:

महात्मा गांधी - मेरा सबसे प्रबल सहारा मुझसे छूट गया। वह जो मनुष्यों का सिरमौर था, नहीं रहा, सिंह गर्जना अब समाप्त हो गई। आने वाली असंख्य पीढ़ियां उन्हें 'आधुनिक भारत के निर्माता' के रूप में याद रखेंगी।
जिन्ना - तिलक एक चतुर व्यावहारिक राजनीतिज्ञ (Smart practical politician) थे।
जवाहर लाल नेहरू - 'भारतीय क्रांति का जनक' (तिलक)
गांधी जी के पूर्व बाल गंगाधर तिलक ही राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे प्रमुख नेता थे।
इस आंदोलन की सफलता के लिए कांग्रेस का समर्थन जरूरी था, इसलिए अब कांग्रेस भी असहयोग आंदोलन को अपना समर्थन दे, गांधी जी ने इसके लिए प्रयास प्रारम्भ कर दिया।

Divyiay Sir GS

Thank
you